POST REGD. No. KKR/161/2011-2013

मूल्य : 25/-

RNI No. HARHIN/2010/36778

वर्ष 3 अंक 3 / जनवरी 2013

हैलो हरियाणा

सूचना-शिक्षा-संचार की मासिक पत्रिका

प्रदेश बढ़ रहा हैं विकास की ओर

रात्रि ठहराव बना आपसी संवाद का माध्यम

महिलाओं की सुरक्षा के लिए उठाने होंगे ठोस कदम

पत्रिका 2013 को जल-संरक्षण वर्ष के रूप में मनायेगी

e-mail : helloharyanakkr@gmail.com

संदीप कुमार

रात्रि ठहराव बना आपसी संवाद का माध्यम

हरियाणा के एक आईएएस अधिकारी ने एक नया इतिहास रचकर अपना नाम उन लोगो की श्रेणी में दर्ज करवा लिया है जिनको केवल और केवल काम करने की धुन लगी रहती है। जो दिन देखते है ना रात , दूसरों के दुःख दर्द को हल्का करने के प्रयास में हर समय किसी वैज्ञानिक की भांति लगे रहना उनकी प्रकृति में शुमार होता है। ऐसी ही एक शख्सियत का नाम है चन्द्रशेखर जो जिला कैथल के उपायुक्त पद पर कार्यरत है। उन्होने जनता की समस्याओं को सुलझाने के लिये उनके बीच जाने का निर्णय लिया। वो जनता के बीच गये मगर किसी के बुलावे या प्रार्थना पत्र के बाद नही,बल्कि अपने स्वयं के विवेक से। वो गांवों मे गये मगर अकेले और चुपचाप नही और ना ही दिन के उजाले में जैसा कि आमतौर पर प्रशासनिक अफसर करते है। उद्धेश्य महज कोई रिकॉर्ड बनाना या लोगो का आकर्षण बनना नही था। उन्होने जनमानस की मुश्किलों और पीडा को समझने के लिये गांवों में रात्रि ठहराव का कार्यक्रम बनाया। इस रात्रि ठहराव ने अनेक नई-नई योजनाओं को जन्म दिया है। इस रात्रि ठहराव में उपायुक्त महोदय के साथ पूरा प्रशासन लोगों की समस्याओं को मौके पर ही हल करने के लिये उनका साथ गया। यह इतिहास गांव आहूं में रचा गया । उसके बाद हर महीने में दो बार की परम्परा स्थापित हो चुकी है। गांव आहूं में ग्राम सभा की मीटिंग में उपायुक्त ने ग्रामवासियों से विकास कार्यो पर चर्चा की । गांव में उपायुक्त चन्द्रशेखर एक उच्च अधिकारी नही बल्कि सामान्य नागरिक की भांति जाकर कार्य करते है। गांव आहूं मे वृक्षारोपण का जो अहम निर्णय लिया गया वह सचमुच बहुत ही ज्यादा काबिलेतारिफ है। ग्रामीणों को ज्यादा वृक्ष लगाने के लिये प्रेरित किया गया। सभी को यह बात अच्छी तरह समझाई गई कि आप इनकी देखभाल अपने बच्चों की भांति करें ताकि यह जल्दी से बडा होकर फल देना शुरू कर दें । यही पौधें बढती खून की कमी के कारण एनिमिया के रोगियों की संख्या को घटा देगे। सचमुच इस वृक्षारोपण के पीछें जो विजन उपायुक्त चंद्रशेखर का था वो कितना स्पष्ट और अधिक लाभ स्वयं में समेटे

इस रात्रि ठहराव ने अनेक नई-नई योजनाओं को जन्म दिया है। इस रात्रि ठहराव में उपायुक्त महोदय के साथ पूरा प्रशासन लोगों की समस्याओं को मौके पर ही हल करने के लिये उनका साथ गया। यह इतिहास गांव आहूं में रचा गया । उसके बाद हर महीने में दो बार की परम्परा स्थापित हो चुकी है। गांव आहूं में ग्राम सभा की मीटिंग में उपायुक्त ने ग्रामवासियों से विकास कार्यो पर चर्चा की । गांव में उपायुक्त चन्द्रशेखर एक उच्च अधिकारी नही बल्कि सामान्य नागरिक की भांति जाकर कार्य करते है। गांव आहूं मे वृक्षारोपण का जो अहम निर्णय लिया गया वह सचमुच बहुत ही ज्यादा काबिलेतारिफ है।

उपायुक्त चंद्रशेखर का यह अनूठा प्रयोग आज अपनी सफलता की कहानी कह रहा है। इस रात्रि ठहराव कार्यक्रम में शुरू -शुरू में तो इसमें ग्रामीणों ने भी ज्यादा रूचि नही दिखाई लेकिन चन्द्रशेखर के मजबूत इरादो और लगन के सामने दिल तोडने वाले सारे किले ध्वस्त हो गये। आज इस कार्यक्रम से ग्रामीणों के इलावा अन्य लोगों का भी जुडाव हो रहा है।

हुये है।

स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिये उन्होनें स्वयं ही अल सुबह सभी आला अधिकारियों के साथ पोलीथीन के अवशेषो को इक्टठा कर एक जगह एकत्रित करने की योजना चलाई है।

उन्होने लोगों से अपील की कि कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में आपका उठ खडे होना पूरे प्रदेश के लिये कितनी फायदेमंद है। गांव के रूके सभी विकास कार्यो को गति देना भी इस रात्रि ठहराव का मुख्य उद्धेश्य है।

रात को सारे ग्रामीणों के साथ बैठकर पूरा प्रशासन सामाजिक संदेश से परिपूर्ण फिल्म देखता है जो मनोरंजन के साथ साथ लोगों में एक जोश का संचार और उन्हे जागरूक करने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। सुबह पूरा प्रशासन निकल पडता है गांव की गलियों और नालियों की सफाई करने के लिये और साथ होते है गांव के लोग। गांव के लोगों के लिये यह दृश्य कोई फिल्मी दृश्य से कम नही होता है, क्योंकि जिन अधिकारियों को वो अब तक केवल कार्यालयों में ही देखते थे वो आज उनके अपने गांव में उनके विकास कार्य करने के लिये आये है। आज उनसे मिलने के लिये ना कोई औपचारिकता ही ना किसी प्रकार का बन्धन होता है।

उपायुक्त चंद्रशेखर का यह अनूठा प्रयोग आज अपनी सफलता की कहानी कह रहा है। इस रात्रि ठहराव कार्यक्रम में शुरू -शुरू में तो इसमें ग्रामीणों ने भी ज्यादा रूचि नही दिखाई लेकिन चन्द्रशेखर के मजबूत इरादो और लगन के सामने दिल तोडने वाले सारे किले ध्वस्त हो गये। आज इस कार्यक्रम से ग्रामीणों के इलावा अन्य लोगों का भी जुडाव हो रहा है।

कुरूक्षेत्र संसदीय क्षेत्र के सांसद नवीन जिन्दल ने डीवीएमसी की मीटिंग में रात्रि ठहराव की विस्तृत जानकारी ली तो उपायुक्त के इस प्रयास की सराहना किये बिना न रह सके। साथ ही उन्होनें बाऊजी की प्रेरणा से चलाये जा रहे ओम प्रकाश जिन्दल ग्रामीण जन कल्याण संस्थान के अधिकारियों को रात्रि ठहराव कार्यक्रम में जाने और सहयोग करने का आदेश दिया। उस दिन से संस्थान से डॉ. की टीम व मैडिकल वैन इस कार्यक्रम में लोगों की जांच कर निःशुल्क दवाइयां और सलाह दे रहा है। गांव धौशाला के रात्रि ठहराव के दौरान संस्थान के अधिकारी उपायुक्त व प्रशासन के दल को गांव में सांसद जिन्दल द्वारा स्थापित ई- हेल्थ सैन्टर सलाह केंद्र पर लेकर गये। गांव मे अलग तरह के बने इस केंद्र की पूरी जानकारी प्रशासनिक अधिकारियों को दी गई। इस केंद्र पर मरीजों की जांच करके उनकी बीमारियों का इलाज करने के लिये अग्रोहा मेडिकल कॉलेज के डॉक्टरों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये सलाह ली जाती है। यही अवसर था जब संस्थान के अधिकारियों ने गांव की एक नेत्रहीन लडकी के इलाज का पूरा खर्च उठाने का जिम्मा लिया। सांसद जिन्दल इस रात्रि ठहराव की पूरी जानकारी और संभावनाओं की तरफ ध्यान दे रहे है। सांसद जिन्दल का मानना है कि 'ऐसे प्रयास और वो भी किसी प्रशासनिक अधिकारी द्वारा जनहित में किये जाते है तो विकास की परिभाषा ही बदल जाती है। प्रदेश के सभी प्रशासनिक अधिकारियों को उपायुक्त चन्द्रशेखर के इस कदम से प्रेरणा लेकर समाज और देश के लिये अपनी सेवाओं से आगे बढ़कर कार्य करना चाहिये'।

रात्रि ठहराव के प्रथम चरण का आखिरी कार्यक्रम गांव साकरा में आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम और भी अधिक महत्वपूर्ण इसलिये था कि इस कार्यक्रम में उपायुक्त व जिला प्रशासन के अन्य अधिकारियों के साथ-साथ 27 प्रशिक्षु आईएएस, आईएफएस और आईपीएस

अधिकारियों ने भी शिरकत की। रात्रि ठहराव के इस अनोखे व लोकप्रिय कार्यक्रम ने प्रशिक्षु अधिकारियों को अपने कार्यकाल में इसे अपनाने के लिये सोचने पर विवश कर दिया। आज प्रत्येक गांव में कार्यक्रम के दौरान गांव के सरपंच अपनी पंचायत के सभी सदस्यों व ग्रामवासियों के साथ काफी मेहनत करते हुए देखे जा सकते हैं।

रात्रि ठहराव के प्रथम चरण के बाद जब इसका दुसरा चरण आरम्भ हुआ। तो इसमें और अधिक सुधार के साथ योजनाओं को लागू किया गया। नई-नई संभावनायें तलाशी जा रही है।

गांव सींणद के रात्रि ठहराव कार्यक्रम के बाद सीवन ब्लॉक के गांव मलिकपुर में यह कार्यक्रम 17 जनवरी को आयोजित किया जाएगा। गर्मियों की उमस भरी रातों और दिसम्बर-जनवरी की हाड गला घोट देने वाली भयंकर सर्दी में भी बच्चे, युवा, स्त्री व बुजुर्ग इस रात्रि ठहराव कार्यक्रम में भाग लेते हैं। यह इस कार्यक्रम की सफलता का सबसे बड़ा पैमाना कहा जा सकता हैं। इस रात्रि ठहराव कार्यक्रम से प्रेरित होकर प्रदेश के दूसरे भागो में भी ऐसे ही कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है। प्रशासनिक अधिकारियों में यह बदलाव का श्रेय उपायुक्त चन्द्रशेखर को जाता हैं। उनका मानना है कि 'एक उपायुक्त होने के नाते मेरी प्राथमिकता लोगों को सरकार की योजनाओं का सीधा लाभ मिल सके और उनके जीवन स्तर को उपर उठाया जा सके। मैं ऐसी व्यवस्था खडी करने का इच्छुक हूं जिससे लोगो के द्वार पर जाकर ही उनकी सब समस्याओं का निदान किया जा सके। इन कार्यक्रमों में गावों के लोगों की समस्याओं को करीब से जानकर दूर करने का मौका मिलता हैं। लोगों से सीधा संवाद करने में रात्रि ठहराव कार्यक्रम बहुत सहयोगी सिद्ध हो रहा है। यह रात्रि ठहराव कार्यक्रम लोगों से आपसी संवाद का कार्यक्रम हैं। वो अपनी पीड़ा हमें बताते है हम अपना दर्द उनके सामने रखते हैं। बातचीत से कोई ना कोई हल निकलने का पूर्ण प्रयास किया जाता हैं। कई गांवों में लोगों ने ऐसे आदंश स्थापित किये हैं। जिनसे एक बहुत बड़े सामाजिक परिवर्तन आने की दस्तक हो चुकी हैं। मेरा उद्देश्य इस रात्रि ठहराव कार्यक्रम को और अधिक खुलापन लाना हैं ताकि लोगों मे प्रशासन से दूरी या प्रशासन के प्रति डर ना हो, बस प्यार हो, विकास हो और पैदा हो राष्ट्रीयता की भावना'

ऐसा संजोग ना कभी देखा ना कभी सुना है। सचमुच अगर जनमानस की समस्याओं को दूर करने के लिये इस प्रकार के प्रयास सभी अफसर और नेता करने लगे तो वो दिन दूर नही जब हमारा प्रदेश और हमारा देश विकास के नये कीर्तिमान लिखेगा।

गर्मियों की उमस भरी रातों और दिसम्बर-जनवरी की हाड गला घोट देने वाली भयंकर सर्दी में भी बच्चे, युवा, स्त्री व बुजुर्ग इस रात्रि ठहराव कार्यक्रम में भाग लेते हैं। यह इस कार्यक्रम की सफलता का सबसे बड़ा पैमाना कहा जा सकता हैं। इस रात्रि ठहराव कार्यक्रम से प्रेरित होकर प्रदेश के दूसरे भागो में भी ऐसे ही कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। प्रशासनिक अधिकारियों में यह बदलाव का श्रेय उपायुक्त चन्द्रशेखर को जाता हैं। उनका मानना है कि 'एक उपायुक्त होने के नाते मेरी प्राथमिकता लोगों को सरकार की योजनाओं का सीधा लाभ मिल सके और उनके जीवन स्तर को उपर उठाया जा सके। मैं ऐसी व्यवस्था खडी करने का इच्छुक हूं जिससे लोगो के द्वार पर जाकर ही उनकी सब समस्याओं का निदान किया जा सके। इन कार्यक्रमों में गावों के लोगों की समस्याओं को करीब से जानकर दूर करने का मौका मिलता हैं। लोगों से सीधा संवाद करने में रात्रि ठहराव कार्यक्रम बहुत सहयोगी सिद्ध हो रहा है'

तू जाने तेरा रब जाने

किसी शायर ने ठीक ही कहा है कि कौन कहता है कि आसमान में सुराख नहीं होता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालों यारो। प्रशासन को गांव में ले जाकर लोगों की समस्याओं का निदान उनके द्वार पर ही करने की जो पहल आपने शुरू की है वह आज जनमानस के बीच बहुत ही लोकप्रिय हो रही है। आपकी इस एक नई पहल को एक नये युग की शुरूआत कहा जा सकता है। आज आलम यह है कि प्रदेश के कई जिलों में रात्रि ठहराव के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है। आज ना केवल प्रदेश में बल्कि देश में और विदेश में बसने वाले भारतीयों के अलावा भी कई विदेशी और सरकारी संस्थाओं के दिलों में हलचल मचाने वाला आपका यह प्रयास एक बहुत बड़ा सामाजिक परिवर्तन हैं। आज लोगों को सुविधाएं उनके ही बीच में जाकर दी जा रही है, जिसने आपको जनता के बीच एक लोकप्रिय उपायुक्त की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है। मैं अपने मन के उद्गार को रोक नहीं पाया और मैंने उसे कुछ शब्दों में ढालने का एक छोटा सा प्रयास यहां प्रस्तुत किया है। और मेरा मानना है कि मेरे ये विचार सिर्फ मेरे ही नहीं बल्कि आज हजारों लाखों लोगो के विचार बन चुके है।- संपादक

तू जाने तेरा रब जाने
क्या तेरे मन में समाया है
सौ-सौ सलाम तेरे जज्बे को
तोड़ दीवार जो तूने अपनाया है
तू जाने तेरा रब जाने
क्या तेरे मन में समाया है

जनसेवा का फूटा अंकुर
इस हाड़ मांस के तन में
निकल खोल से बाहर फिर
पला पुसा मानस मन में
और अब यौवन में गहराया है
तू जाने तेरा रब जाने
क्या तेरे मन में समाया है
सौ-सौ सलाम तेरे जज्बे को
तोड़ दीवार जो तूने अपनाया है
तू जाने तेरा रब जाने
क्या तेरे मन में समाया है

अफसर का डर था खौफ था
दफ्तर भी कभी देखा नहीं था
अब घर मिलती है सब सुविधा
ना कोई संकट ना कोई दुविधा
राह विकास की हमें दिखलाकर
गंगा प्रेम की जनता में बहाकर
तूने नये युग का उद्घोष कराया है
तू जाने तेरा रब जाने
क्या तेरे मन में समाया है
सौ-सौ सलाम तेरे जज्बे को
तोड़ दीवार जो तूने अपनाया है
तू जाने तेरा रब जाने
क्या तेरे मन में समाया है

तेरी उमंग से कर्मठ को सीख मिली
युवामन में नई एक उम्मीद खिली
बचपन हंसा मिला महिलाओं को मान
बुजुर्ग पायें तेरी महफिल में सम्मान
तूने कर्महीनो का सर झुकाया है
तू जाने तेरा रब जाने
क्या तेरे मन में समाया है
सौ-सौ सलाम तेरे जज्बे को
तोड़ दीवार जो तूने अपनाया है
तू जाने तेरा रब जाने
क्या तेरे मन में समाया है

ये ही कसक और ये ही ठसक
अब ताउम्र चलानी होगी
जिन्दगी मिली जो इस चोले में
सेवा भट्टी में गलानी होगी
तेरे कर्म से कांटा भी हर्षाया है
तू जाने तेरा रब जाने
क्या तेरे मन में समाया है
सौ-सौ सलाम तेरे जज्बे को
तोड़ दीवार जो तूने अपनाया है
तू जाने तेरा रब जाने
क्या तेरे मन में समाया है

आओं सब सलाम करे उस मां को
जन कर ऐसा पूत दिया जहां को
घुप्प अंधेरे की काली रातें मिटाकर
जिसने नई सुबह का सूरज दिखलाया है
तू जाने तेरा रब जाने
क्या तेरे मन में समाया है
सौ-सौ सलाम तेरे जज्बे को
तोड़ दीवार जो तूने अपनाया है
तू जाने तेरा रब जाने
क्या तेरे मन में समाया है।